जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय
नई दिल्ली
07 दिसम्बर 2017

प्रेस नोट

बाबा साहब डॉ अम्बेडकर ने भारतीय समाज की गलत धारणाओं की बहुत यातनाएं सहीं लेकिन भारतीय संविधान की रचना करते हुए उन्होंने उस पीड़ा को हावी नहीं होने दिया| ये बातें आज भारतीय अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर रामशंकर कठेरिया ने बाबा साहब डॉ आंबेडकर की पुन्य तिथि पर आयोजित कार्यक्रम में कहीं। 6 दिसंबर को जेएनयू के डॉक्टर अंबेडकर सेंट्रल लाइब्रेरी द्वारा बोधिसत्व डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी के परिनिर्वाण दिवस के अवसर पर एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बुद्धिजीवियों ने बाबा साहब पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम शुरुआत भंते द्वारा बुद्ध बन्दना से हुई। 'बाबा साहब की राष्ट्र निर्माण में भूमिका' विषय पर आयोजित इस संगोष्ठी में प्रशासन, राजनीति एवं अकादमी जगत् से विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण वक्ताओं ने अपने विचार रखे। प्रो. रामशंकर कठेरिया जी ने बाबा साहब के बारे मे विस्तार से अपनी बात रखते हुए शैक्षणिक जगत में बाबा साहब के योगदान पर प्रकाश डाला और जेएनयू में बाबा साहब के परिनिर्वाण दिवस मनाये जाने की प्रशंसा की और उन्होंने विश्वविद्यालय के पुस्तकालय द्वारा बाबा साहब के साहित्य और दर्शन पर आधारित पुस्तकों और थीसिस का एक अलग सेक्शन खोले जाने की सराहना की। उन्होंने यह भी कहा कि आगामी 14 अप्रैल बाबासाहेब के जन्म दिवस पर इससे भी बड़ा कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने विश्वविद्यालय प्रशासन को सरकार की तरफ से ऐसे आयोजनों के लिए हर संभव मदद का आश्वासन दिया।

अपना बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रीय अनुसूचित जाति जनजाति आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ विजय सोनकर शास्त्री ने ऐतिहासिक संदर्भ में अस्पृश्यता संबंधी अनेक नई जानकारियां प्रस्तुत कीं | डॉ.विजय सोनकर शास्त्री ने विस्तार से बाबा साहब के बारे में बताते हुए कहा कि उनके विचारों को जाने बगैर दलित और वंचित समुदाय ही नहीं बल्कि संपूर्ण मानव जाति का उद्धार संभव नहीं है। भारत सरकार के उच्च अधिकारी राजेंद्र कश्यप ने बाबा साहब की लिखित पुस्तकों के हवाले से कहा की बाबा साहेब को भारत के वंचित और अस्पृश्यों के मुक्तिदाता के रूप में देखा जाना चाहिए।
कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि राजेश दिवाकर सांसद लोकसभा राजेश दिवाकर ने कहा बाबा साहब के अप्रतिम योगदान का पुनर्मूल्यांकन कर उन्हें भारत रत्न से भी बड़ी उपाधि विश्वरत्न से विभूषित किया जाना चाहिए। अपने
स्वागत भाषण में प्रोफेसर विवेक कुमार ने कहा कि राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में बाबा साहब के सपनों पर निर्मित भारतीय संविधान की मूल संवेदना के निहितार्थों को अपनाकर ही भारत का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है| उन्होंने समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में बाबा साहब को न केवल अछूतों का उद्धारक बल्कि संपूर्ण मानव जाति के मुक्ति का महानायक बताया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में जेएनयू के रेक्टर प्रोफेसर राणा प्रताप सिंह ने सभी भारतीयों के अंदर बाबा साहब का अंश बताते हुए इस बात पर जोर दिया कि प्रत्येक व्यक्ति यदि अपने अंदर के बाबा साहब को जागृत रखे तो यह देश बहुत तेजी से दुनिया के अग्रणी देशों से आगे निकल जाएगा।

डॉ. रमेशचंद्र गौर पुस्तकालय अध्यक्ष बाबा साहब डॉक्टर अंबेडकर सेंट्रल लाइब्रेरी मैं लाइब्रेरी द्वारा बनाई हुई एक महत्वपूर्ण डॉक्यूमेंट्री भी दिखाई| कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए डॉ राजेश पासवान ने पूरे विश्वविद्यालय परिवार का अभिनंदन किया क्योंकि इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षक संघ, कर्मचारी संघ, अधिकारी संघ इत्यादि सभी सदस्यों का भरपूर सहयोग रहा| प्रोफ़ेसर राजेश पासवान ने बाबा साहब को कलम का सबसे ताकतवर व्यक्ति बताया। उन्होंने कहा की जेएनयू लाइब्रेरी में स्थापित बाबासाहब खंड को समृद्धि बनाकर बाबा साहब को सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकती है।

इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय परिसर में स्थित बहुत परिवारों ने भाग लिया एवं अंत तक वक्ताओं को सुनते रहे| कार्यक्रम के संचालक प्रोफेसर सुधीर कुमार ने खचाखच भरे सभागार में बड़े गर्व से कहा कि बाबा साहब के परिनिर्वाण दिवस पर जेएनयू प्रशासन द्वारा आयोजित किया जाने वाला यह प्रथम कार्यक्रम है| और संकल्प किया कि भविष्य में 14 अप्रैल और 6 दिसंबर को हम लगातार कार्यक्रम करते रहने की कोशिश करेंगे|